Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 4 | APRIL 2024

जैन धर्म का पंचशील सिद्धान्त : वर्तमान में प्रासंगिकता

प्रियंका ओझा [1]

[1] **एम. ए., नैट , इतिहास.**

ABSTRACT:

जैन धर्म भारतीय श्रमण परम्परा से निकला प्राचीन धर्म और दर्शन है। महावीर स्वामी द्वारा पूर्व प्रचलित सिद्धांतों में ब्रह्मचर्य जोड़कर पंच शील सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये थे। जैन धर्म के मतानुसार शील का अनुकरण कर प्राणी अपनी आत्मा को कैवल्य की दशा के लिए अग्रसर कर सकता है। कैवल्य की प्राप्ति प्राणी अपनी जीवित दशा प्राप्ति में भी प्राप्त कर सकता है परंतु उसके लिए शील का अनुसरण करना आवश्यक है।

KEYWORDS:

जैन धर्म, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी, पंचशील सिद्धान्त: सत्य, अहिंसा, आस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, वर्तमान की राजनीतिक – सामाजिक दशा।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th April 2024	30th April 2024

विषय प्रवेश

जैन धर्म भारतीय श्रमण परंपरा से निकला प्राचीन धर्म और दर्शन है। जैन ग्रंथों आगम के अनुसार वर्तमान में प्रचलित जैन धर्म भगवान आदिनाथ (ऋषभ देव) के समय से प्रचलन में आया, यहां से जो तीर्थंकर परम्परा हुई वह भगवान महावीर (वर्धमान) तक चलती रही। जैन परंपरा में कुल 24 तीर्थंकर हुए। जैन जिन शब्द से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ 'जीतने वाला' जिसने स्वंय की इन्द्रियों पर संयम प्राप्त कर लिया हो अथवा उन्हें जीत लिया हो उसे जितेन्द्रिय कहा गया है।

जैन ग्रन्थों के अनुसार वर्तमान काल में काल चक्र का अवरोही भाग अवसर्पिणी गतिशील है और इसके चौथे युग में 24 तीर्थंकरों का जन्म हुआ था। तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ थे। पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी के शासक के यहां हुआ था। भगवान पार्श्वनाथ वर्ष की आयु में गृह त्याग कर सन्यासी गये। 83 तक कठोर तपस्या करने के 84वें दिन उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। कैवल्य ज्ञान के पश्चात् चातुर्याम (सत्य अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह) की शिक्षा प्रदान की तथा इसका प्रचार प्रासार किया।

पार्श्वनाथ का कलिकाल कल्पतरू कलियुग में कल्पवृक्ष कहा गया है। पार्श्वनाथ ने सम्मेद शिखर पर अपना शरीर त्याग किया था। पार्श्वनाथ के ठीक बाद 273 वर्षों के पश्चात जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर के रूप में 599 ई.पू. में वैशाली के ज्ञातृक क्षत्रिय कुल के कुंडलपुर में स्थानीय राजा सिद्धार्थ के यहां पर महावीर का जन्म हुआ। इनके बचपन का नाम वर्धमान था। एक राजकुमार की भाँति वर्धमान को भी शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा प्रदान की गई, उनका विवाह यशोदा नामक राजकुमारी से हुआ तथा इस विवाह से उन्हें 'एक पुत्री अयोज्जा की प्राप्ति भी हुई। लेकिन उनका मन सांसारिक विषयों में नहीं रमा। 30 वर्ष की आयु में अपने ज्येष्ठ भ्राता नंदिवर्धन की आज्ञा लेकर उन्होंने श्रामणी दीक्षा ली। 12 वर्ष तक उन्होंने मौन तपस्या की और अन्त में उन्हें कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई। अपने ज्ञान के बल पर उन्होंने जनकल्याण के लिए उपदेश देना प्रारंभ किया।

भगवान महावीर ने अपने प्रवचनों में 1.अहिंसा, 2.सत्य, 3.आस्तेय, 4.ब्रह्मचर्य और 5.अपरिग्रह पर सबसे अधिक जोर दिया। त्याग और संयम, प्रेम और करुणा, शील और सदाचार ही उनके प्रवचनों का सार था।

उनके पंचशील सिद्धान्तों - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का विशद वर्णन इस प्रकार है -

1. अहिंसा:

इसका शाब्दिक अर्थ है - चोट न पहुंचाना और किसी भी प्रकार से जीव को नुकसान पहुंचाने की भावना का अभाव। यह धारणा मनसा, वाचा, कर्मणा तीनों प्रकार की हिंसा का निषेध करती है। जैन धर्मानुसार इस प्रकार का सूक्ष्म विचार, व्यवहार, आत्मा के मोक्ष प्राप्त करने की क्षमता को अबाधित करता है। जैन अहिंसा की इस अवधारणा को न केवल मनुष्यों तक बल्कि सभी जानवरों, पौधों, सूक्ष्म जीवों और जीवन या जीवन क्षमता वाले सभी प्राणियों तक विस्तारित करते हैं। सारा जीवन पवित्र हैं और हर प्राणी को अपनी अधिकतम क्षमता तक निडर होकर जीने का अधिकार है। जैन धर्म के अनुसार जीवन की सुरक्षा जिसे अभयदानम् भी कहा जाता है सर्वोच्च दान है जो एक व्यक्ति ही कर सकता है।

जैन धर्म के सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों में से एक, तत्वार्थसूत्र के अनुसार" किसी प्राणी में इन्द्रियों और जीवन शक्तियों की संख्या जितनी अधिक होगी, उसकी पीड़ा सहने और महसूस करने की क्षमता भी उतनी ही अधिक होगी। इसीलिए जैन धर्म के अनुसार मनुष्य, गाय, बाघ जैसे उच्च इंद्रियों वाले प्राणियों और जिनके पास पांच इन्द्रियां हैं, और सोचने तथा दर्द महसूस करने की क्षमता है, उनके प्रति हिंसा कम इन्द्रियों वाले प्राणियों जैसे कीड़े या एकल इन्द्रिय प्राणियों की हिंसा की तुलना में अधिक कर्म को आकर्षित करती है। इसीलिए जैन धर्म अपने अनुयायियों को निर्देश देता है कि वे उच्च-इन्द्रिय प्राणियों के प्रति हिंसा से पूरी तरह बचें और जहां तक संभव हो निम्न- इंद्रिय और एकल – इंद्रिय प्राणियों के प्रति हिंसा का भाव कम से कम रखें। जैन पाठ पुरुषार्थ सिद्धयुपाय" गृहस्थ (श्रावक) के लिए आवश्यक आचरण से संबंधित है और अहिंसा के मूल व्रत पर विस्तार से चर्चा करता है।

2. सत्य:

मिथ्या वचन का परित्याग। सत्यवादिता का आदर्श है सूनृत ! जो सत्य सबका हितकारी हो और प्रिय हो, उसे सूनृत कहते हैं। (प्रियं पथ्यं वचस्तथ्यं सूनृतं व्रतमुच्यते) जो केवल सत्य है उसे कहने से भी वह कभी-कभी दूषणीय वाचालता, गाम्यता, चापलता तथा परनिन्दा भी हो सकता है। इसीलिए सत्यवादिता का आदर्श सूनृत कहा गया है। सत्यव्रत का पालन करने के लिए मनुष्य को लोभ, डर और क्रोध को दूर करना चाहिये और किसी का उपहास करने की प्रवृत्ति का भी दमन करना चाहिये।

जैन धर्म में कहा गया है कि, किसी वस्तु के गुण को समझने समझाने और अभिव्यक्त करने का सापेक्षिक सिद्धांत है 'सापेक्षता'। अर्थात 'किसी अपेक्षा से'। अपेक्षा के विचारों से कोई भी चीज सत भी हो सकती है और असत् भी। सत्य का पालन वाणी, मन और कर्म से करना चाहिये। मूलाचार में सत्य महाव्रत का लक्षण बताया गया है-

रागादीहिं असच्चं चत्ता परतावसच्च वयणेति

सुत्तत्थाणंवि कहणे अयधा वयुणुज्झणं सच्च ।

हस्समय कोहलोहा मणि वचिकायेण सव्वकालम्मिं ।

मोसं ण य भासिज्जो पच्चयधादी हवदि एसो ॥

अर्थात राग द्वेष, मोह के कारण असत्य वचन तथा दूसरों को सन्तप्त करने वाले ऐसे सत्य वचन को छोडना और द्वादशांग के अर्थ कहने में अपेक्षा-रहित वचन की छोडना सत्य महाव्रत है।

भगवती आराधना / 1193 में सत्य के 10 भेद बताये गये हैं - जनपद सम्मति, स्थापना, नाम, रूप, प्रतीति, संभावना, व्यवहार, भाव और उपमासत्य ऐसे सत्य के 10 भेद हैं।

3. अस्तेय:

चौर वृत्ति का वर्जन अर्थात् बिना दिये परद्रव्य का ग्रहण करना ही अस्तेय है । जैन धर्म के अनुसार किसी जीव का प्राण जिस तरह पवित्र है, उसी तरह उसकी धन संपति भी । जैन विद्वानों का मत है कि, धन संपत्ति मनुष्य का बाह्य जीवन है अतः धन संपत्ति का अपहरण मानो उसके जीवन का ही अपहरण है । अस्तेय इस उथले अर्थ में नहीं है बल्कि इस महाव्रत का एक दूसरा ही गहरा प्रभावशाली आयाम है, अतः अचार्य सिद्धांत का गहन आध्यात्मिक अर्थ है- शरीर - मन - बुद्धि को 'मैं' नहीं मानना। 'मैं' शुद्ध चैतन्य स्वरुप हूँ तथा शरीर- मन - बुद्धि इस मानव जीवन का यापन करने हेतु साधक मात्र साधन रूप हैं जिनके द्वारा हम अपने यथार्थ स्वरूप तक पहुंच सकें। जैसे, जल से भरी मटकी का कार्य केवल जल को अपने भीतर संभालना है; मटकी, जल नहीं है। प्यास जल से बुझती है, मटकी से नहीं । इसी प्रकार चेतना इस शरीर-मन-बुद्धि में व्यापक है परंतु वह 'मैं' अर्थात स्वरूप नहीं है । अपनी अज्ञान अवस्था से बाहर आकर जब हम अपने शुद्ध आत्मिक स्वरूप को ही 'मैं' व मेरा मानते हैं । तभी भगवान द्वारा प्रदत्त अचौर्य के सिद्धांत, का पालन होगा।

4. ब्रह्मचर्य:

यह सिद्धांत उपरोक्त 3 सिद्धांतों - अहिंसा, सत्य, अचौर्य के परिणाम स्वरूप फलीभूत होता है । इसका शाब्दिक अर्थ है' ब्रह्म +चर्य' अर्थात ब्रह्म (चेतना) में स्थिर रहना । जब मनुष्य उचित - अनुचित में से उचित का चुनाव करता है एवं अनित्य शरीर-मन-बुद्धि से ऊपर उठकर शाश्वत स्वरूप में स्थित होता है तो परिणामतः वह अपनी आनंद रूपी स्व सत्ता के केन्द्र बिन्दु पर लौटता है। जिसे ब्रह्मचर्य कहा जाता है। शरीर - मन - बुद्धि को मैं भाव की धारणा से बाहर निकालने के परिणामस्वरूप शारीरिक साहचर्य व संभोग की चाहत मिटानी होती है- इस अवस्था को हम ब्रह्मचर्य मान सकते हैं । क्योंकि जब अपने ही शरीर से मोह नहीं रहता है तब किसी शरीर से भोग की तृष्णा को छोड़ पाना अत्यंत सरल हो जाता है।

5. अपरिग्रह:

जो स्व स्वरूप के प्रति जागृत हो जाता है और शरीर-मन-बुद्धि को अपना न मानते हुऐ जीवन व्यतीत करता है उसकी बाह्य दिनचर्या संयमित दिखती है; जीवन की हर अवस्था में अपरिग्रह का भाव दृष्टिगोचर होता है। जैन मतानुसार अपरिग्रह के तीन आयाम हैं - 1. वस्तुओं का अपरिग्रह, 2. व्यक्तियों का अपरिग्रह, 3. विचारों का अपरिग्रह, इन सभी व्रतों के लिए उन सभी विषयों का परित्याग करना पड़ता है जिनके द्वारा इंद्रिय सुख की उत्पत्ति होती है। ऐसे विषयों के अंतर्गत सभी प्रकार के शब्द, स्पर्श, रूप, स्वाद तथा गंध आते हैं।

इस प्रकार पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी द्वारा जगत के प्राणिमात्र के कल्याण के लिए पंचशील सिद्धांतों का प्रतिपादन कर न केवल तत्कालीन समय बल्कि वर्तमान समय को भी समस्त दुखों से उबारने की दृष्टि प्रदान की गई है । आज के विश्व में हिंसा, असत्यता, मिथ्या प्रचार, भौतिकवादी भोग प्रवृत्ति, संग्रहण प्रवृत्ति आदि का बोलबाला है । समस्त प्राणी असत्य के नजरिये से इन्हीं भावों को ग्रहण कर जन्म, जरामरण के चक्र में ग्रसित हो रहे हैं । व्यक्तियों को शुभ अशुभ के कर्मों से बचाने के लिए पंचशील के सिद्धांतों का अनुकरण अनुमोदन करना होगा। तब ही सभी समस्याओं का हल निकल सकता है।

वर्तमान समय में संपूर्ण विश्व में हिंसा का बोलबाला है । प्राणी-प्राणी के प्राणों का प्यासा बना हुआ है । संपूर्ण परिदृश्य में मारकाट, वैचारिक हिंसा आदि दिखाई देती है । जैन मतानुसार व्यक्ति को हिंसा का मन, वचन और कर्म से न तो समर्थन करना चाहिए और ना ही उनका अनुमोदन करना चाहिए। विश्व शांति के द्वारा पूरी पृथ्वी पर अहिंसा स्थापित करने का विचार है । जिसके अन्तर्गत देश या तो स्वेच्छा से या शासन की एक प्रणाली के जरिए इच्छा से सहयोग करते हैं, ताकि युद्ध को रोका जा सके । जिस प्रकार आग से आग को नहीं बुझाया जा सकता उसी प्रकार समस्त हिंसा से हिंसा को नहीं रोका जा सकता। वर्तमान समय में अहिंसा के सर्वश्रेष्ठ वाहक के रूप में महात्मा गाँधी का नाम गिनाया जाता है । उनके मत में अहिंसा है- अपनी नकारात्मक भावनाओं को सकारात्मक भावनाओं में बदलना । उनके अनुसार जब हम अहिंसा, प्रेम के दर्शन का अभ्यास करते हैं तो हम खुद को और दूसरों को वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे वे हैं और इससे स्वाभाविक रूप से क्रोध, ईर्ष्या या भय जैसी विनाशकारी भावनाओं का अंत हो जाएगा । गाँधी जी के अनुसार अहिंसा कमजोरी का पर्याय नहीं है, बल्कि इसके विपरीत यह शक्ति और सामर्थ्य की अभिव्यक्ति है ।

दूसरा सिद्धांत सत्य भी विश्व की सभी समस्याओं के हल का निराकरण करने का सामर्थ्य रखता है । जैन धर्म का सप्तभंगीनय सिद्धांत अनेकांतवाद ज्ञान के सात नयों का सुंदर विश्लेषण करता है । सत्य के आंशिक रूपों को स्पष्ट भी करता है । व्यक्ति यदि सत्य व्रत का पालन करता है तो वह लोभ, भय, दबाव, डर, क्रोध पर भी विजय प्राप्त कर सकता है । वर्तमान समस्याओं का मूल कारण लोभ, भय, डर और क्रोध ही है । यदि व्यक्ति इनसे निवृत्त हो जायेगा तो सभी प्रकार की समस्याओं का अंत हो जाएगा ।

तीसरा सिद्धांत अस्तेय अर्थात चौरवृत्ति का वर्जन । यहाँ विश्व के संदर्भ में अस्तेय का अर्थ है संपत्ति का अपहरण, लूटपाट की मनोवृत्ति, आर्थिक अपराध आदि। क्योंकि व्यक्ति यदि इस भाव को ग्रहण कर लें कि मैं शुद्ध चैतन्य स्वरूप हूँ तथा शरीर, मन, बुद्धि इस मानव जीवन का यापन करने के साधन मात्र हैं, तो व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को समझ जाएगा और इस प्रकार के पाप कर्मों से बचता हुआ अपनी मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है।

चौथा सिद्धांत ब्रह्मचर्य के पालन पर ज़ोर देता है। इसकी पालना से विश्व में लिंग हिंसा, व्याभिचार, दुष्कर्म, कोक हत्या, बलात्कार जैसे गंभीर मानवीय अपराधों से बचा जा सकता है।

पांचवे सिद्धांत अपरिग्रह के पालन से व्यक्ति सभी दुखों से मुक्त हो सकता है । व्यक्ति को स्वयं के जीवन यापन में न्यूनतम आवश्यकता का भाव हो तो उसे वस्तुओं के संग्रहण की प्रवृत्ति नहीं होगी और वस्तुओं का सम्यक वितरण भी हो सकेगा। इस संबंध में गाँधी जी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। यह सिद्धांत सामाजिक आर्थिक अवधारणा है । जो समाज में धन और संसाधनों के समान वितरण पर ज़ोर देती है । जैन मतानुसार अपरिग्रह के तीन आयाम हैं - वस्तुओं का अपरिग्रह, व्यक्तियों का अपरिग्रह, विचारों का अपरिग्रह ।

निष्कर्ष:

पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी द्वारा प्रतिपादित और प्रचारित पंचशीलता का सिद्धांत वस्तुतः मनुष्य को कर्म बंधन से मुक्त करने का सिद्धांत है । व्यक्ति इन शीलों के पालन से संवरा, निर्जरा की भी प्राप्ति कर मोक्ष प्राप्त करता है । व्यक्ति की सभी समस्याओं का हल इन्हीं सिद्धांतों के पालन में निहित है। इनके पालन से विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है तथा मानवीय मूल्यों को पुनः स्थापित किया जा सकता है।

REFERENCES

1. चंद्रधर शर्मा - भारतीय दर्शन

2. आचार्य तुलसी - अणुव्रत आंदोलन

3. आर.एस. शर्मा - भारत का प्राचीन इतिहास